



भारत में एंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन अब छात्रों को दी जा रही है, क्योंकि सरकार स्टार्टअप इंडिया जैसी पहल से रोजगार पैदा करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है...

क

या आज के समय में जो बेरोजगारी देश में व्याप्त है उसमें यूनिवर्सिटी या शिक्षण संस्थानों की भी कोई भूमिका है? यह सवाल बहुत ही प्रासंगिक है क्योंकि युवाओं में बेरोजगारी और असंतोष बढ़ रहा है।

बेरोजगारी की समस्या देश में प्लेग बीमारी

की तरह फैल रही है इसलिए ऐसे परिदृश्य में एंटरप्रेन्योरशिप की शिक्षा एक ऐसा पहलू है जिस पर सभी शिक्षण संस्थानों को ध्यान देना चाहिए ताकि नौकरियां पैदा हो सकें न कि नौकरियां बुढ़ने वाले लोगों की तादाद बढ़े।

जब भी हम 'एंटरप्रेन्योरशिप' टर्म की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में अपने आप इस शब्द को सुनकर 'स्टार्टअप' का खयाल आता है। पिछले दशक के दौरान स्टार्टअप ने भारतीय अर्थव्यवस्था में कई तरह के



बदलाव लाए हैं। इन स्टार्टअप की वजह से कई तरह के रोजगार का सृजन हुआ और देश के युवाओं को एंटरप्रेन्योरशिप में भविष्य दिखा। देश आत्मनिर्भर भारत

डॉ. अरविनी शर्मा

इंटरप्रेन्योर इंस्टीट्यूट ऑफ
मैनेजमेंट, जेके लक्ष्मीपत
यूनिवर्सिटी, जयपुर



के सपने को साकार करने के लिए तैयार है, ऐसे में माइक्रो एंटरप्रेन्योरशिप और सोशल एंटरप्रेन्योरशिप की भूमिका बहुत ज्यादा हो जाती है। इनको बढ़ावा देने से देश आत्मनिर्भर बन सकता है।

● शिक्षण संस्थान एंटरप्रेन्योरस या नौकरी पैदा करने वाले युवा कैसे तैयार कर सकते हैं?

रातों-रात छात्रों को जाँच फ़िएटर बना देना संभव नहीं है। छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने की जरूरत है ताकि एंटरप्रेन्योर बनने के लिए उनमें रचनात्मक सोच विकसित हो सके। भारत में एंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन (उद्यमिता शिक्षा) अब छात्रों को दी जा रही है, क्योंकि सरकार स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया अभियानों जैसी अपनी पहलों के माध्यम से रोजगार पैदा करने पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। शिक्षा से यह तथ्य हो पाता है कि कोई व्यक्ति एंटरप्रेन्योरशिप की तरफ आकर्षित होगा या सोचेगा। इसलिए छात्रों को शिक्षा प्रदान करने वाले कालिजों की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है। छात्रों में एंटरप्रेन्योरशिप क्षमताओं को विकसित करने और इस क्षमता को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक संस्थान निम्नलिखित चीजों पर ध्यान दे सकते हैं:

● छात्रों में एंटरप्रेन्योरशिप की समझ को विकसित करें
हर एक छात्र एंटरप्रेन्योर बनने में दिलचस्पी नहीं रखेगा। फिर भी एंटरप्रेन्योरशिप के बारे में छात्रों को सामान्य जानकारी देने के लिए सभी स्ट्रीम में एंटरप्रेन्योरशिप को अनिवार्य कोर्स या सब-कोर्स के रूप में पढ़ाया जाना

आइडिया जेनरेशन प्रतियोगिताओं और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट सहित कई तरीकों से एंटरप्रेन्योरियल स्किल का निर्माण कर सकते हैं।

● बेरोजगारी की समस्या का निवारण एंटरप्रेन्योरशिप से किस तरह से संभव है?

देश में बेरोजगारी की दर अप्रैल में 7.83 प्रतिशत थी। देश में जब बेरोजगारी अपने चरम पर है तो ऐसे में एंटरप्रेन्योरशिप नए बिजनेस और इंटरप्राइजेज के दरवाजे खोलता है जिससे नौकरियाँ पैदा होती हैं। उदाहरण के लिए जब कोई निवेशक किसी स्टार्टअप या बिजनेस में पैसा लगाता है, तो एंटरप्रेन्योर को बिजनेस का विस्तार करने के लिए टीम में ज्यादा लोगों की जरूरत पड़ती है। इस वजह से रोजगार बढ़ता है और लोगों को नौकरियाँ मिलती हैं जिससे बेरोजगारी की समस्या कम होती है। इन दिनों एंटरप्रेन्योर उन व्यक्तियों को भी काम पर रखने को तैयार रहते हैं जिनके पास कोई औपचारिक शिक्षा या डिग्री नहीं होती है। ऐसे लोगों में बस सही ट्रेनिंग, स्किल और सीखने की इच्छा की जरूरत होती है। बड़ी कंपनियों या कॉर्पोरेट्स की तुलना में यह एक बड़ा बदलाव है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ उन्हीं लोगों को काम पर रखती हैं जिनकी शिक्षा की डिग्री उच्च होती है या जिसमें कोई असाधारण स्किल होती है। इस वजह से एंटरप्रेन्योरशिप कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए भी रोजगार का एक साधन बन सकती है।

भारत युवाओं का देश है और यहाँ प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। एंटरप्रेन्योर स्टार्टअप के माध्यम से रोजगार के अवसर पैदा करके इस युवा आबादी की पूरी क्षमता का लाभ उठा सकते हैं। इस दिशा में शिक्षण संस्थान शिक्षा और ट्रेनिंग के माध्यम से एंटरप्रेन्योरियल एक्सीलेंस (उद्यमशीलता) को नींव रख सकते हैं। शिक्षा वास्तव में छात्रों के सोचने के तरीके को बदल सकती है, उन्हें नौकरी तलाशने वाले के बजाय नौकरी देने वाला होने के बारे में सोचने के काबिल बना सकती है। इस संबंध में कालिजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।